ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 282-283**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

जयशंकर प्रसाद की भावनात्मक अभिव्यक्ति : आँसू

प्रियंका

शोध अध्येत्री– हिंदी विभाग, श्री भगवान महावीर पीजी कॉलेज, पावानगर, फाजिलनगर, कुशीनगर, सम्बद्ध, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर (उ.प्र.) भारत

Received-13.03.2025 **Revised-20.03.2025** **Accepted-24.03.2025** **E-mail : priyankagkp243@gmail.com**

सारांश: ***जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रमुख और पहले कवि है। 1918 ई0 में इनकी झरना गीति संग्रह निकली इसके बाद इन्होंने एक से बढ़ कर एक गीतों का सृजन किया। वही 1925 ई0 में 'आँसू' निकली जो की एक विरहजन्य काव्य है। यह एक श्रेष्ठ गीतिकाव्य के रूप में भी हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठित है। आँसू गीतिकाव्य को कालिदास के मेघदूत के समतुल्य भी माना जाता है। इस गीत में प्रसाद अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति गीतों के माध्यम से करते है। इस सन्दर्भ में डॉ0 आशा किशोर कहती है कि–"रोना और गाना वेदना के ये दो पहलू बड़े संगीतमय है। साधारण मनुष्य रोता है, असाधारण गाता है। दोनों के बीच एक तारतम्य है।"[1] आँसू गीतिकात्य प्रसाद के असाधारण प्रतिभा का परिणाम है। प्रसाद अपनी पीड़ा को आँसू के माध्यम से व्यक्त करते हैं प्रसाद कहते है कि:***

"जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति–सी छायी
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आयी"[2]

कुंजीभूत शब्द– छायावाद, झरना गीति संग्रह, सृजन, आँसू, विरहजन्य, आँसू गीतिकाव्य, मेघदूत, समतुल्य, अभिव्यक्ति, रोना और गाना वेदना, संगीतमय

जयशंकर प्रसाद इस गीतिकाव्य की शुरूवात करुणा से भरे भावों से करते है। इस गीति में विरह, प्रेम, और करुणा का वर्णन बहुत ही प्रभावशाली ढंग किया गया है। इस गीत की पहली पंक्ति में ही इसकी झलक दिखायी देती है। जैसे :

"इस करुणा कलित ह्रदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
व्देना असीम गरजती?"[3]

यह गीतिकाव्य प्रसाद के निजी जीवन को उद्घाटित करती है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि कवि किसी युवती से प्रेम करते थें, उसी की निष्ठुरता की भावना या यह कह सकते है की उसके छोड़ कर जाने के बाद कवि के ह्रदय के मनोभाव आँसू के रूप में निकलते है। इस गीतिकाव्य के संदर्भ में आलोक श्रीवास्तव कहते है कि –"प्रसाद के प्रेम से भरे रागमय ह्रदय मन–मस्तिष्क की संपूर्ण सृजन–यात्रा स्वाधीन स्त्री की साहित्य में शक्तिपूर्ण स्थापना, स्त्री के प्रेम भरे ह्रदय की महत्ता, पुरुष के राग मन की विविध अभिव्यक्ति की यात्रा है। 'आँसू' इस महान सृजनात्मक यात्रा का गौरवपूर्ण भावमय उद्धत स्मारक है। यही प्रसाद की आत्मानुभूति का वह क्षेत्र है, जिस पर उनकी समूची काव्य यात्रा पूरी हुई है।"[4]

आँसू में विरह के साथ प्रेम की भी अभिव्यक्ति मिलती है। कभी–कभी लगता है कि यह गीत कवि अपनी प्रेयसी के वियोग में लिखे है, अर्थात् प्रेम लौकिक स्तर का लगता है, तो कभीलगता है कि यह गीत अलौकिक प्रिय परमात्मा के लिए है जिनसे दूर होनें पर आत्मा उसके वियोग में दुःखी होती हैअर्थात् परमात्मा से दूर होनें पर दुःख चारों तरफ से घेर लेता है। प्रसाद कहते है कि :

"झंझा झकोर गर्जन था
बिजली थी नीरद माला,
पा कर इस शून्य ह्रदय को
सब नें आ डेरा डाला।"[5]

लेकिन प्रसाद कहीं कहीं लौकिक प्रिय के सौंदर्य का भी वर्णन करते नजर आते है। प्रेयसी के मुख, नेत्र, भौऐं, दांत के सौंदर्य का वर्णन प्रसाद ने बहुत ही सुंदरता से किया है। प्रसाद कहते है कि :

"बंधा था विधु को किसने
इन काली जंजीरों से
मणि वाले फणियों का मुख
क्यों भरा हुआ हीरो से?
काली आंखों में कितनी
यौवन के मद की लाली
मानिक–मदिरा से भर दी
किसने नीलम की प्याली?"[6]

कवि अपनी प्रेयसी के मुख को चन्द्रमा तथा उसके नेत्रों को नीलम के पात्र कह कर उसके सौन्दर्य के भाव को व्यापक रूप देते है। आगे वह कहते है कि प्रेयसी तुम अपने ह्रदय में प्रेम के उज्जवल और पवित्र भाव लेकर मेरे निराशा भरे जीवन मे प्रवेश करती हो। अर्थात् इस पतझड़ भरे जीवन मे तुम नये फूलों की फुलवारी की तरह आयी हो।

पतझड़ था, झाड़ खड़े थे
सूखी–सी फुलवारी में
किसलय नव कुसुम बिछा कर
आये तुम इस क्यारी में।
शशि–मुख पर घूँघट डाले
अंचल में दीप छिपाये
जीवन की गोधूली में

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

कौतूहल–से तुम आये।"[7]

इस गीतिकाव्य में प्रसाद प्रेयसी के सात्विक प्रेमभाव को अभिव्यक्त करते हैं। यहाँ प्रेम और विरह दोनों का वर्णन साथ–साथ मिलता है। इस सन्दर्भ में प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित कहते हैं कि– "प्रसाद का छायावादी भावबोध पूरे उत्कर्ष के साथ प्रकट हुआ। ऑसू में कवि की अन्तर्भावना प्रगल्भ हो उठी है। प्रसाद की विरहानुभूति, उनकी व्यंजनातिशयता, सौंदर्यचेतना और सुख दुःख की समन्वय वृत्ति इस काव्य का वैशिष्ट्य है।"[8]

कवि अपनी पीड़ा, जो प्रेम के विरह से उत्पन है उस करुण कहानी को सुना रहे है और आगे कहते हैं। इसे सुनते के लिए किसी के पास अवकाश नहीं है अर्थात् वह अपनी प्रेम की व्यथा, करुणा को वह रो–रो कर सुना रहे है लेकिन वह प्रेमी इससे जान कर अनजान बना हुआ है। प्रसाद इस में प्रेमी की निष्ठुरता का बहुत सजीव चित्रण करते हैं। जैसे :

"रो –रो कर सिसक सिसक कर
कहता मैं करुण कहानी
तुम सुमन नोचते सुनते
करते जानी अनजानी।"[9]

इस गीत की अन्तिम पंक्ति में विरह वेदना रूपी जो निराशा के भाव है वह आशा का नवीन संचार करता नजर आता है यहाँ जो प्रसाद का दुख व पीड़ा है वह संसार की पीड़ा बन जाती है। इस गीत के माध्यम से प्रसाद निराशा के भाव को आशावादी बनाने का प्रयत्न करते है। यह आँसू जो पहले करुणा का प्रतीक बनी थी वही आँसू गीत के अन्तिम मे ओस की बूंदों के समान विश्व पर बरसने को तैयार है अर्थात् प्रसाद इस गीत मे निराशा से आशा का संचार करते हैं :

"सबका निचोड़ लेकर तुम
सुख से सूखे जीवन में
बरसो प्रभात हिमकन–सा
आँसू इस विश्व सदन में।"[10]

आँसू गीत का प्रारम्भ करुणा रूपी संध्या से होता है और बीच में रात्रि रूपी दुखों का विस्तार मिलता है, जो प्रातःकाल में सुख के भाव से भर जाता है। इस सन्दर्भ में रामस्वस्वरूप चतुवेदी कहते हैं कि–"आँसू' की संध्या रात में बदलती है, रात गहरी होती है, सन्नाटा बढ़ता जाता है। साथ–साथ कवि की वेदना गहराती है अंतिम प्रहर में पहुँच कर कवि पाता है कि वेदना उसी की नहीं है, यह तो सम्पूर्ण सृष्टि की पीड़ा है जिसे वह अनुभव कर रहा है। वह अपनी वेदना को सम्बोधित करके पूछता है, बतला दो अरे, न हिचको क्या देखा शून्य गगन में। कितना पथ हो चल आई रजनी के मृदु निर्जनमें?" कवि की वेदना सारी रात घूमी है, और सम्पूर्ण सृष्टि में उसने पीड़ा ही पीड़ा देखी है।"[11]

निष्कर्षत – हम कह सकते हैं कि 'आँसू' गीतिकाव्य का प्रारम्भ करुणा से होता है और अंत आशा के संचार से होता है। इसमें दुख सुख दोनों ही भाव स्पष्ट झलकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 आशा किशोर, आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ संख्या–164
2. जयशंकर प्रसाद, आँसू, मयूर पेपरबैक्स, दिल्ली, 2008, पृष्ठ संख्या– 13
3. वही, पृष्ठ संख्या–7
4. आलोक श्रीवास्तव, स्वप्न लोक में आज जागरण (कामायनी पूर्व का काव्य), संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2022, पृष्ठ संख्या–323
5. जयशंकर प्रसाद, आँसू, मयूर पेपरबैक्स, दिल्ली, 2008, पृष्ठ संख्या – 14
6. वही, पृष्ठ संख्या–18
7. वही, पृष्ठ संख्या–16
8. प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित, प्रसाद समग्र,उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ,2006, पृष्ठ संख्या– 16
9. जयशंकर प्रसाद, आँसू, मयूर पेपरबैक्स, दिल्ली, 2008, पृष्ठ संख्या –13
10. वही, पृष्ठ संख्या–60
11. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, पृष्ठ संख्या–117

*****